

## VII. समष्टि आर्थिक परिदृश्य

वैश्विक तथा घरेलू दोनों ही कारकों ने वृद्धि में गिरावट के जोखिम को बढ़ावा दिया। मुद्रास्फीति की स्थिति में अनुमान के अनुरूप कुछ गिरावट देखी गई, परंतु रुपये के मूल्यहास के असंपूर्ण अंतरण, ऊर्जा क्षेत्र की दबी हुई मुद्रास्फीति तथा विस्तारकारी राजकोषीय नीति से इसके बढ़ने का जोखिम है। कारोबारी माहौल के कमजोर पड़ने की बात की पुष्टि विभिन्न एजेंसियों द्वारा किए गए कारोबार प्रत्याशा सर्वेक्षणों एवं रिजर्व बैंक के औद्योगिक संभावना सर्वेक्षण से होती है। पेशेवर पूर्वानुमानकर्ताओं के सर्वेक्षण से भी वृद्धि में गिरावट आने का संकेत मिलता है। अधिकांश अंतरराष्ट्रीय तथा घरेलू एजेंसियों ने भी भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि संबंधी पूर्वानुमान में संशोधन करके उसे कम किया है। जहां वृद्धि दर में आई गिरावट प्रमुख चुनौती के रूप में उभरी है वहीं मुद्रास्फीति का जोखिम बना हुआ है जिसके चलते वृद्धि दर में न्यूनतम गिरावट को सहते हुए भी कम तथा स्थायी प्रकार की मुद्रास्फीति को प्राप्त करने का लक्ष्य हासिल कर पाना मौद्रिक नीति के लिए एक चुनौती होगी।

### वैश्विक बाधाओं तथा घरेलू कारकों से जुड़े जोखिम के चलते वृद्धि की संभावना कमजोर पड़ गई है

VII.1 हालांकि वृद्धि दर में गिरावट की संभावना का अनुमान पहले से किया गया था, फिर भी वैश्विक अर्थव्यवस्था में पिछले कुछ महीनों में जो बदलाव हुए उनसे यह आभास मिलता है कि गिरावट का स्तर तथा उसका विस्तार पहले के अनुमान से कहीं अधिक हो सकता है। प्रतिकूल वैश्विक वातावरण के दुष्प्रभाव का असर वृद्धि की संभावनाओं पर दिखाई देने से उभरती तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में गिरावट संबंधी चिंता उभरने लगी है। लगभग सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में ओईसीडी के संयुक्त अग्रणी संकेतक, जिनकी डिजाइन व्यापार चक्र के पूर्व संकेतकों के रूप में किया गया है, में गिरावट आई। ग्राहक तथा कारोबारी विश्वास में बढ़ती निराशा के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। ऋण के बोझ में दबी वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रोत्साहन राशि की सीमित गुंजाइश को देखते हुए रिकवरी में और विलंब हो सकता है।

VII.2 वैश्विक वृद्धि में कमी के वातावरण में भारत की अल्पावधि वृद्धि की संभावना में गिरावट आई तथा यह आर्थिक प्रबंधन के लिए चुनौती बन गई है। रिजर्व बैंक ने 25 अक्टूबर 2011 की 2011-12 की मौद्रिक नीति की दूसरी तिमाही समीक्षा में उस समय की समष्टि आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए 2011-12 की जीडीपी वृद्धि के आधार पूर्वानुमान में संशोधन करके 8.0 प्रतिशत से घटाकर 7.6

प्रतिशत कर दिया। उसके बाद वैश्विक तथा घरेलू दोनों ही मोर्चों पर स्थितियां अनुकूल नहीं रही हैं जिनसे वृद्धि दर पहले के अनुमान से भी कम रह सकती है।

VII.3 2011-12 में कृषि क्षेत्र की संभावनाएं उत्साहजनक हैं। परंतु अब तक घरेलू अर्थव्यवस्था द्वारा सामना की जा रही बाधाओं, जैसे कि मुद्रास्फीति तथा उससे जुड़ी ऊंची ब्याज दरें, वैश्विक अनिश्चितता तथा घरेलू नीतिगत वातावरण, ने 2011-12 में औद्योगिक क्षेत्र के निष्पादन पर प्रतिकूल असर डाला। मुद्रास्फीति तथा निवेश के चक्र में आई गिरावट से एक बड़ा जोखिम उत्पन्न हो गया है क्योंकि इनसे वृद्धि की निरंतरता के लिए खतरा उत्पन्न होता है। वैश्विक मांग में आई कमी तथा औद्योगिक वृद्धि में आई गिरावट दोनों ही कारणों से सेवा क्षेत्र में भी गिरावट का जोखिम है।

VII.4 वृद्धि दर को वर्तमान के स्तर से ऊपर उठाना संभव है परंतु इसके लिए कारोबारी विश्वास को बहाल करना जरूरी है। मौद्रिक नीतिगत कड़ाई में विराम लगाए जाने तथा मुद्रास्फीति में और कमी आने से वृद्धि दर को कुछ गति पकड़ने में मदद मिलनी चाहिए। नवंबर 2011 में आईआईपी में उच्चतर वृद्धि तथा दिसंबर 2011 के विनिर्माण तथा सेवा संबंधी खरीदकर्ता प्रबंधकों के सूचकांक में पहले ही सुधार के कुछ संकेत मिलने लगे हैं। तथापि कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि 2011-12 में वास्तविक जीडीपी में गिरावट का जोखिम बढ़ गया है।

### मुद्रास्फीति में गिरावट आई परंतु विनिमय दर के अंतरण के व्यापक हो जाने से जोखिम बना हुआ है

VII.5 नवंबर 2011 से हेडलाइन थोक मूल्य सूचकांक की मुद्रास्फीति में गिरावट आई। मुद्रास्फीति में हाल ही में जो गिरावट आई है वह मुख्यतः आधार प्रभाव एवं खाद्य वस्तुओं की कीमतों, विशेषकर सब्जियों में आई मौसमी गिरावट की वजह से थी। खाद्य वस्तुओं की मुद्रास्फीति ऋणात्मक दायरे में चली जाने पर भी प्रोटीन युक्त वस्तुओं की मुद्रास्फीति दहाई के अंकों में बनी रही। अतः मौसमी गिरावट के दौर के समाप्त होने एवं आधार प्रभाव के खत्म होने पर खाद्य वस्तुओं की मुद्रास्फीति फिर से काफी हद तक पहले की स्थिति पर आ सकती है।

VII.6 वृद्धि दर के क्षमता से कम स्तर तक चले जाने से सकल मांग में गिरावट आने की संभावना है जो व्यापक रूप ले चुकी मुद्रास्फीति को कम करने में मदद कर सकती है। इसके अलावा, वस्तुओं की कम होती अंतरराष्ट्रीय कीमतें सकारात्मक कारक के रूप में उभरकर आई

हैं। परंतु रुपये के मूल्यहास के असर का अंतरण तथा विस्तारकारी राजकोषीय नीति जोखिम के रूप में उभरकर आई है जिसने मांग के कम दबाव एवं वस्तुओं के मूल्य के अनुकूल असर को कम कर दिया। उर्जा की कीमतों से जुड़ी दबी हुई मुद्रास्फीति नीति संबंधी विकल्पों को और सीमित कर सकती है क्योंकि इनकी कीमतों में संशोधन किया जाना अपरिहार्य हो सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरी संबंधी मुद्रास्फीति अभी भी ऊंचे स्तर पर है तथा वास्तविक मजदूरी में बढ़ोतरी हुई है, हालांकि बढ़ोतरी की दर पिछले वर्ष से कम है।

VII.7 समग्र रूप में, मुद्रास्फीति की अब तक की उभरती प्रवृत्ति पहले के अनुमानित पथ के अनुरूप है तथा मार्च 2012 तक इसके 7.0 प्रतिशत रहने की संभावना है। तथापि मुद्रास्फीति के दबाव के नरम पड़ने की दिशा में जोखिम बना हुआ है। उभरती समष्टि आर्थिक स्थितियों के संबंध में नीतिगत उपाय करते समय इन जोखिमों को ध्यान में रखना होगा।

### कारोबार प्रत्याशा एवं औद्योगिक संभावना सर्वेक्षणों से विश्वास के स्तर में गिरावट का संकेत मिलता है

VII.8 विभिन्न एजेंसियों द्वारा किए गए सर्वेक्षणों से कारोबारी माहौल में समग्र गिरावट आने की पुष्टि होती है। सीआईआई तथा फिक्की दोनों के कारोबार विश्वास सूचकांकों में पिछली तिमाही की तुलना में गिरावट आई तथा वर्तमान का स्तर एक वर्ष पूर्व के स्तर से कम है। कारोबारी विश्वास संबंधी एनसीएईआर के अद्यतन सर्वेक्षण में भी विश्वास के स्तर में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर तथा पिछले सर्वेक्षण की तुलना में गिरावट दर्शायी गई है (सारणी VII.1)। परंतु डन एंड ब्रैडस्ट्रीट के कारोबारी उत्साह सूचकांक में पिछले सर्वेक्षण की तुलना में कुछ सुधार दर्शाया गया है। समग्र कारोबारी उत्साह को प्रभावित करने वाले कारणों में मांग में आई कमी, वैश्विक अनिश्चितता का बढ़ा हुआ स्तर, क्रेडिट की उपलब्धता में कमी तथा इनपुट की लागतों में हुई बढ़ोतरी प्रमुख हैं।

### औद्योगिक संभावना सर्वेक्षण से भविष्य में गिरावट का संकेत मिलता है

VII.9 रिजर्व बैंक द्वारा अक्टूबर-दिसंबर 2011 के दौरान किए गए औद्योगिक संभावना सर्वेक्षण के 56वें दौर में प्रत्याशा तिमाही (अक्टूबर-दिसंबर 2011) में कारोबार प्रत्याशा सूचकांक में मामूली वृद्धि देखी गई है जबकि अगली तिमाही (जनवरी-मार्च 2012) की प्रत्याशा में मामूली कमी दर्ज हुई (चार्ट VII.1)। यह एक समग्र संकेतक है जिसका निर्धारण कारोबार से संबंधित मूल्यांकन तथा प्रत्याशा तिमाही के कई मानदंडों के आकलन के आधार पर किया जाता है।

VII.10 कारोबार प्रत्याशा सूचकांक के निवल उत्तरों के विश्लेषण से संकेत मिलता है कि 2011-12 की तीसरी तिमाही में 'उत्पादन' संबंधी मूल्यांकन में मामूली वृद्धि हुई जबकि 2011-12 की चौथी तिमाही की प्रत्याशा का स्तर पूर्ववत रहा। 'आदेश बही' से संबंधित निवल उत्तर में लगातार चार तिमाहियों में गिरावट आई। 'वित्त की उपलब्धता' के संबंध में उत्साह के स्तर में और कमी आई। उत्तरदाताओं में से अधिकांश ने पिछली सात तिमाहियों की तुलना में 'वित्त की लागत' में बढ़ोतरी होने की बात कही, परंतु ऐसा प्रतीत होता है कि 2011-12 की चौथी तिमाही में प्रवृत्ति में बदलाव आया है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने 'कच्चे माल के मूल्य' के मामले में दबाव के बने रहने तथा अगली तिमाही में इसमें बढ़ोतरी होने की बात कही। मूल्यांकन तथा प्रत्याशा दोनों ही तिमाही में 'बिक्री मूल्य' तथा 'लाभ मार्जिन' के संबंध में उत्साह के स्तर में और गिरावट आई (सारणी VII.2)।

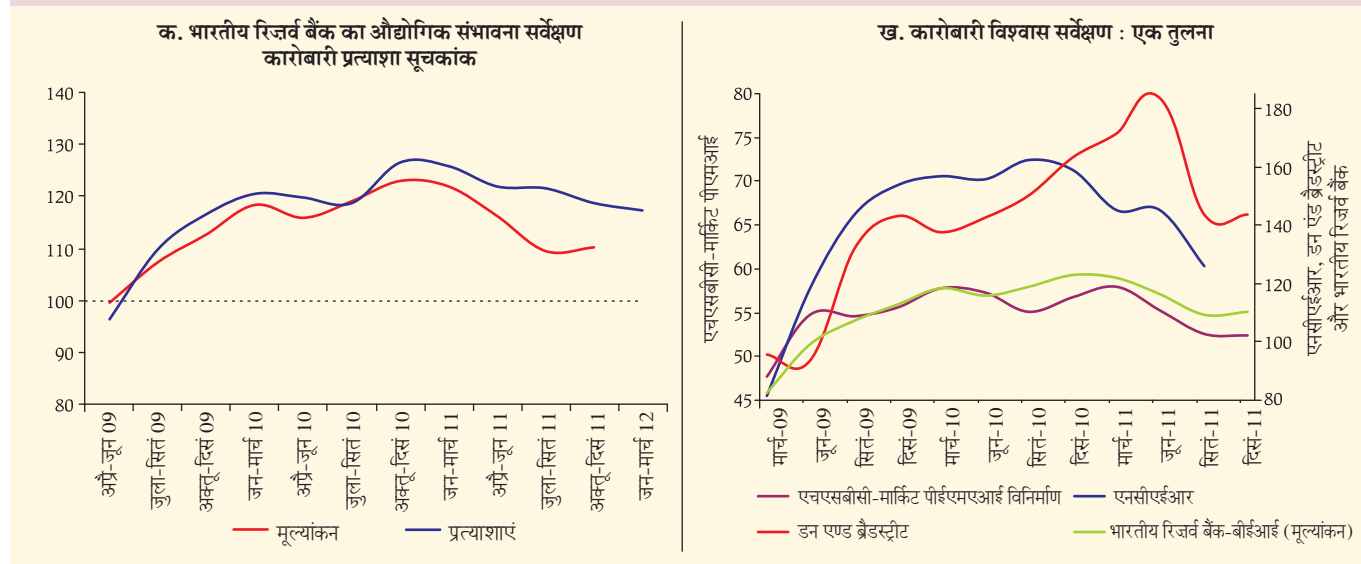
### उपभोक्ताओं के विश्वास से सुधार के कुछ संकेत मिलते हैं

VII.11 रिजर्व बैंक द्वारा दिसंबर 2011 में किया गया उपभोक्ता विश्वास सर्वेक्षण (<http://www.rbi.org.in/CCS7>) के सातवें

सारणी VII.1: कारोबार प्रत्याशा सर्वेक्षण

अवधि / सूचकांक	एनसीएईआर-कारोबार विश्वास सूचकांक जनवरी 2012	फिक्की समग्र कारोबार विश्वास सूचकांक ति.1: 2011-12	डन एंड ब्रैडस्ट्रीट कारोबार विश्वास सूचकांक ति.1: 2012	सीआईआई कारोबार विश्वास सूचकांक ति.3:2011-12
1	2	3	4	5
सूचकांक का वर्तमान स्तर	125.2	51.6	156.2	48.6
पिछले सर्वेक्षण के अनुसार सूचकांक	125.4	63.7	143.7	53.6
एक वर्ष पूर्व सूचकांक का स्तर	158.5	71.9	171.2	66.2
क्रमिक प्रतिशत परिवर्तन (तिमाही-दर-तिमाही)	-0.2	-19.0	8.7	-9.3
प्रतिशत परिवर्तन (वर्ष-दर-वर्ष)	-21.0	-28.2	-8.8	-26.6

### चार्ट VII.1: औद्योगिक संभावना सर्वेक्षण



दौर से परिवारों की सकारात्मक धारणा में कुछ सुधार का संकेत मिलता है जबकि पिछली तिमाही के सर्वेक्षण में इसमें मामूली गिरावट आई थी (चार्ट VII.2)। किन्तु उच्च मुद्रास्फीति समग्र सकारात्मक विचारों के संबंध में प्रमुख बाधा बनी हुई है।

### एजेंसियों ने वृद्धि संबंधी पूर्वानुमान में कमी की

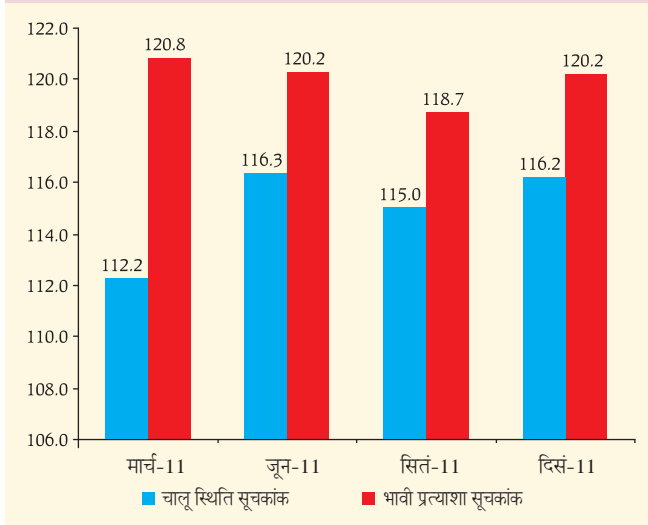
VII.12 भारत सरकार ने 9 दिसंबर 2011 को 2011-12 के वृद्धि संबंधी अपने पूर्वानुमान में काफी कम करके 7.5 प्रतिशत (+/-0.25

### सारणी VII.2: रिजर्व बैंक का औद्योगिक संभावना सर्वेक्षण

मानदंड	आशावादी उत्तर	निवल उत्तर								
		जनवरी-मार्च 2011		अप्रैल-जून 2011		जुलाई-सितंबर 2011		अक्तूबर-दिसंबर 2011		जनवरी-मार्च 2012
		प्र.	मू.	प्र.	मू.	प्र.	मू.	प्र.	मू.	प्र.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1. कारोबार की समग्र स्थिति	बेहतर	50.1	38.6	41.4	32.6	39.8	18.7	35.2	17.7	33.6
2. समग्र वित्तीय स्थिति	बेहतर	41.1	27.1	33.4	24.1	30.6	11.7	26.3	11.2	25.2
3. वित्त की उपलब्धता	सुधार	32.3	23.8	27.3	21.5	24.2	12.1	20.2	10.4	19.0
4. बाह्य वित्त की लागत	गिरावट	-31.3	-42.5	-35.0	-49.0	-39.7	-50.2	-41.0	-50.6	-38.8
5. उत्पादन	वृद्धि	48.6	41.4	40.0	32.1	40.6	22.6	39.9	25.3	40.4
6. आर्डर बुक	वृद्धि	44.0	34.7	38.4	28.1	35.9	20.3	33.4	18.4	31.3
7. क्षमता के उपयोग का स्तर	वृद्धि	33.1	27.4	24.0	17.2	25.0	9.9	22.2	10.8	24.3
8. कच्चे माल की लागत	गिरावट	-53.6	-71.9	-57.0	-65.5	-51.7	-58.1	-49.7	-61.2	-50.1
9. कंपनी में रोजगार	वृद्धि	20.6	18.7	17.4	18.2	19.4	15.6	16.5	11.3	13.6
10. निर्यात	वृद्धि	26.3	18.9	24.0	18.2	25.8	13.1	22.1	11.5	18.6
11. आयात	वृद्धि	21.3	19.9	18.9	17.6	19.0	15.7	16.9	11.6	15.5
12. बिक्री मूल्य	वृद्धि	18.6	26.5	23.7	21.5	18.3	10.7	16.0	8.9	14.7
13. लाभ मार्जिन	वृद्धि	8.3	-4.3	3.8	-9.9	2.5	-17.1	-1.6	-17.3	-2.9

**टिप्पणी:** 1. 'निवल उत्तर' की गणना 'आशावादी' (सकारात्मक) और 'निराशावादी' (नकारात्मक) धारणा की सूचना देने वाली कंपनियों के प्रतिशत हिस्से के अंतर के अनुसार की गयी है; यथापूर्व स्थिति (कोई परिवर्तन नहीं) के रूप में दी गयी सूचना को हिसाब में नहीं लिया गया है। उच्चतर 'निवल उत्तर' विश्वास के उच्चतर स्तर को और निम्नतर निवल उत्तर इसकी विपरीत स्थिति को दर्शाता है।  
2. प्र.: प्रत्याशा और मू.: मूल्यांकन

**चार्ट VII.2: चालू स्थिति सूचकांक और भावी प्रत्याशा सूचकांक का निवल उत्तर**



प्रतिशत) किया (सारणी VII.3)। कुछ अन्य एजेंसियों ने भी अपने पूर्वानुमान में वृद्धि दर में कमी आने का संकेत दिया था तथा इनकी अद्यतन स्थिति में भी इसमें गिरावट आने की संभावना है।

### पेशेवर पूर्वानुमानकर्ताओं के सर्वेक्षण में कमजोर वृद्धि तथा मुद्रास्फीति में गिरावट का संकेत<sup>1</sup>

VII.13 रिजर्व बैंक द्वारा किये गये 'पेशेवर पूर्वानुमानकर्ताओं के सर्वेक्षण' (<http://www.rbi.org.in/SPF18>) के 18वें दौर में 2011-12 तथा 2012-13 के जीडीपी वृद्धि के पूर्वानुमान में

**सारणी VII.3: 2011-12 के लिए एजेंसियों के अनुमान**

एजेंसी	अद्यतन अनुमान		पूर्ववर्ती अनुमान	
	वास्तविक जीडीपी वृद्धि (प्रतिशत)	माह	वास्तविक जीडीपी वृद्धि (प्रतिशत)	माह
1	2	3	4	5
प्रधानमंत्री की अर्थिक सलाहकार परिषद	8.2	जुलाई -11	9.0 (+/- 0.25)	फर-11
वित्त मंत्रालय	7.5 (+/- 0.25)	दिसं -11	8.6	जुला-11
अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष *	7.6	सितं -11	8.0	जून-11
विश्व बैंक	6.8	जन -12	7.5	सितं-11
ओईसीडी (बाजार मूल्य पर)	7.6	नवं -11	8.5	मई-11
एशियाई विकास बैंक	7.9	सितं -11	8.2	अप्रै-11
एनसीएईआर	7.9	अक्टू -11	8.3	जुला-11

\*: अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का बाजार मूल्य पर वित्त वर्ष 2011 का पूर्वानुमान 7.7 प्रतिशत है।

<sup>1</sup> पूर्वानुमान पेशेवर पूर्वानुमान कर्ताओं के विचार है न कि रिजर्व बैंक के

पिछले सर्वेक्षण की तुलना में कमी की गयी है (सारणी VII.4)। 2011-12 के लिए उद्योग में वृद्धि संबंधी पूर्वानुमान में काफी कमी की गयी है जबकि सेवाओं के संबंध में मामूली कमी की गयी है। औसत मुद्रास्फीति में 2011-12 तथा 2012-13 की तुलना में गिरावट आने का अनुमान किया गया है। सर्वेक्षण परिणाम से वृद्धि के संबंध में कम उत्साह का संकेत मिलता है जबकि मुद्रास्फीति में क्रमशः गिरावट आने की आशा है।

### मुद्रास्फीति प्रत्याशाएं असहज स्तर पर बनी हुई हैं

VII.14 परिवारों के मुद्रास्फीति प्रत्याशा सर्वेक्षण के अद्यतन दौर (<http://www.rbi.org.in/IESH26>) से ज्ञात होता है कि वर्तमान तिमाही की मुद्रास्फीति की धारणा तथा भविष्य की मुद्रास्फीति संबंधी प्रत्याशा दोनों में बढ़ोतरी हुई है। परंतु हाल की अवधि में प्रत्याशाओं की वृद्धि दर में कमी आई है। यह सर्वेक्षण दिसंबर 2011 में 12 शहरों में किया गया जिसमें सात पेशागत समूहों के 4000 परिवारों को शामिल किया गया था।

### 2012-13 में आगे कुछ चुनौतियां बनी हुई हैं, आगे और चुनौतियां आ सकती हैं, लेकिन कुछ संभावनाएं भी हैं

VII.15 2011-12 की अंतिम तिमाही तथा अगले वर्ष 2012-13 में भारतीय अर्थव्यवस्था को कुछ पहले की चुनौतियों के साथ-साथ कुछ नयी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। मुद्रास्फीति के क्षेत्र में गिरावट के अच्छे संकेत मिल रहे हैं जिनसे वृद्धि संबंधी चिंताओं के समाधान हेतु मौद्रिक नीति को कार्य करने के लिए कुछ गुंजाइश बनी है। इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि विभिन्न वस्तुओं एवं मानव पूंजी सहित सेवाओं के क्षेत्र में मांग और आपूर्ति के बीच असंतुलन होने की आशंका है। मामूली स्तर की रिकवरी के प्रति मुद्रास्फीति संबंधी तेज कार्रवाई एक निरंतर जोखिम की स्थिति पैदा करती है, जैसे कि 2009 के अंत के आस-पास की स्थिति थी और ऐसी स्थिति से निपटने के लिए मौद्रिक नीति को निरंतर सतर्क रहना पड़ता है। इसके अलावा, तेल की प्रतिकूल कीमतों के माहौल में व्यापार तथा पूंजी प्रवाह दोनों ही दृष्टि से प्रतिकूल वैश्विक स्थिति ने पिछले तीन वर्षों के दौरान वृद्धि तथा स्थिरता की संभावनाओं को धूमिल कर दिया है।

VII.16 विनिमय दरों में भारी मात्रा में तेज बदलाव के रूप में नयी चुनौती आ खड़ी हुई हैं। इन बदलावों का परिणाम प्रवाह (भुगतान संतुलन, राजकोषीय घाटा) तथा स्टॉक (तुलन-पत्र) के संकेतकों के लिए प्रतिकूल होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। तथापि, वैश्विक

**सारणी VII.4: पेशेवर पूर्वानुमानकर्ताओं का चुनिंदा समष्टि आर्थिक संकेतकों का माध्यिक पूर्वानुमान - 2011-12 और 2012-13**

1	वास्तविक 2010-11	वार्षिक पूर्वानुमान				तिमाही पूर्वानुमान									
		2011-12		2012-13		2011-12				2012-13					
						ति3		ति4		ति1		ति2		ति3	
		पि.	अ.	पि.	अ.	पि.	अ.	पि.	अ.	पि.	अ.	पि.	अ.	पि.	अ.
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	
1. कारक लागत पर वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर (प्रतिशत में)	8.5#	7.6	7.0	7.7	7.3	7.7	6.7	7.8	7.0	7.6	6.8	7.6	7.1	-	7.3
क. कृषि और संबद्ध गतिविधियां	6.6#	3.2	3.4	3.0	3.0	2.7	3.3	3.1	3.5	3.0	3.0	3.2	3.2	-	3.3
ख. उद्योग	7.8#	6.4	4.1	6.9	5.8	7.1	2.7	7.6	3.8	7.2	4.4	6.8	5.1	-	5.8
ग. सेवाएं	9.2#	9.1	9.0	9.0	8.8	9.2	8.9	9.1	8.5	8.9	8.5	9.1	8.7	-	8.8
2. सकल देशी बचत (चालू बाजार मूल्यों पर जीडीपी के प्रतिशत के रूप में)	-	34.0	33.0	34.6	33.5	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
3. औसत मुद्रास्फीति-डब्ल्यूपीआई सकल देशी पूंजी निर्माण	9.6	8.8	8.8	6.7	6.5	8.8	8.8*	7.0	6.8	6.6	6.4	6.6	6.2	-	6.3
4. विनिमय दर (भा.र./ 1अम.डॉलर अवधि के अंत में)	44.6	47.0	52.0	45.0	48.0	48.0	53.3*	47.0	52.0	46.1	50.8	45.8	49.3	-	49.0
5. 91 दिवसीय खजाना बिल प्रतिलाभ (अवधि के अंत में)	8.2	8.3	8.2	7.7	7.5	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
6. 10 वर्षीय सरकारी प्रतिभूति प्रतिलाभ (अवधि के अंत में)	8.4	8.3	8.3	8.0	7.9	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
7. निर्यात (वृद्धि दर, प्रतिशत में)	37.3	19.5	17.5	20.0	14.3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
8. आयात (वृद्धि दर, प्रतिशत में)	26.7	24.4	20.6	18.0	14.4	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
9. व्यापार शेष (बिलियन अमरीकी डॉलर)	-130.6	-	-	-	-	-37.7	-42.4	-39.0	-34.0	-38.0	-43.8	-38.0	-40.2	-	-47.0

पि. : पिछले दौर का अनुमान अ. : अद्यतन दौर का अनुमान #: संशोधित अनुमान - : उपलब्ध नहीं।

\*: वास्तविक !: अमरीकी डॉलर में बीओपी आधार पर

टिप्पणी: अद्यतन दौर का संदर्भ दिसंबर 2011 की तिमाही के अंत के 18वें दौर से है जबकि पिछला दौर का संदर्भ सितंबर 2011 की तिमाही के अंत के 17वें दौर से है।

स्रोत: पेशेवर पूर्वानुमानकर्ताओं का 18वां दौर: ति.3: 2011-12

समस्याओं का समाधान लंबे समय तक न होने की स्थिति में वित्तीय तथा बाह्य स्थिरता संबंधी चिंताएं महत्वपूर्ण हो जाती हैं। एक विवेकपूर्ण दृष्टिकोण यह होगा कि मूल्यहास के दबाव को इस प्रकार संतुलित किया जाए जिससे काफी बड़े और अनियंत्रणीय आघात की संभावना को कम किया जा सके। यूरोपीय सरकारी ऋण संकट के त्वरित तथा सुदृढ़ समाधान की संभावनाएं कम हुई हैं, अतः भारत के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह पर्याप्त क्षमता बनाये रखे ताकि आगे और बाह्य आघात की स्थिति से निपटा जा सके।

VII.17 अंत में, इन बड़ी चुनौतियों के बीच कुछ स्पष्ट संभावनाएं भी हैं। कई नीतिगत प्रयास निर्णय के अंतिम चरण में हैं जो खाद्य

की उपलब्धता, राजकोषीय क्षमता, ढांचागत क्षेत्र में निवेश, भूमि अधिग्रहण तथा कौशल निर्माण से जुड़ी अड़चनों को दूर कर सकते हैं। यदि इनमें से कुछ क्षेत्रों की अड़चनों को दूर करने की दिशा में वास्तविक प्रगति की जाती है तो इनसे निवेश के वातावरण में भारी बदलाव आएगा और यह उच्च वृद्धि तथा कम मुद्रास्फीति के वातावरण को बनाए रखने के लिए जरूरी है। अल्पावधि में कम होती मुद्रास्फीति मौद्रिक नीति को वृद्धि संबंधी चिंताओं के समाधान के लिए कार्य करने की गुंजाइश पैदा करती है, परंतु यदि आपूर्ति संबंधी विभिन्न अड़चनों को दूर करने के लिए ठोस उपाय नहीं किए जाते हैं तो इनसे अधिक-से-अधिक अस्थायी राहत ही मिल सकती है।